International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

उच्च माध्यमिक स्तर के आदिवासी विद्यार्थियों में रक्षात्मक युक्तियों का तुलनात्मक अध्ययन

प्रेमलता कन्डुलना[1], डॉ. घुमान अहीरवार असिस्टेंट प्रोफेसर[2]

[1]शोधार्थी श्री सत्य सांई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय सीहोर; (म.प्र.)
[2]निर्देशिक श्री सत्य सांई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय सीहोर; (म.प्र.)

सार तत्वः
वर्तमान शोध पत्र में उच्च माध्यमिक स्तर के आदिवासी विद्यार्थियों में रक्षात्मक युक्तियों के प्रयोग का अध्ययन किया गया है। विद्यार्थियों के रक्षात्मक युक्तियों के प्रयोग का मूल्यांकन डॉ. एन. आर. मृणाल ठाकुर एवं डॉ. उमा. सिंघाल द्वारा विकसित और मानकीकृत उपकरण द्वारा किया गया था। इस परीक्षण में कुल 10 कहानियाँ हैं तथा दस छोटी छोटी कहानियां हैं। कहानी के पश्चात चार कथन दिए गए हैं। हर कथन के पांच उत्तर हैं जिसमें से दो उत्तर चुनना है। ये चार कथन चार प्रकार के व्यवहार से संबंधित है। ये चार व्यवहार वास्तविक, कल्पित, विचार एवं भावना से जुड़ा हुआ है। निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालय के आदिवासी विद्यार्थियों में रक्षात्मक युक्तियों के प्रयोग में सांख्यिकीय रुप से महत्वपूर्ण संबंध है। अध्ययन के परिणाम को सामान्य बनाने के लिए विस्तृत अध्ययन की आवश्यकता है।

सांकेतिक शब्द – उच्च माध्यमिक विद्यालय, आदिवासी विद्यार्थी, रक्षात्मक युक्तियाँ

परिचय

रक्षात्मक युक्तियाँ समायोजी युक्तियाँ हैं तथा रक्षात्मक युक्तियाँ वे मानसिक प्रक्रियाएं हैं जिनके द्वारा इंड, इगो और सुपर ईगो के बीच चेतन अथवा अचेतन में होने वाले संघर्षों को दूर अथवा कम किया जाता है। इन युक्तियों में बालक अपने बुद्धि एवं विवेक का प्रयोग करते हुए व्यावहारिक जीवन की विभिन्न परिस्थितियो में उत्पन्न होने वाली विभिन्न परिस्थितियों के संदर्भ में अपना समायोजन करने का प्रयत्न करता है जिसमें वह कुछ परिस्थितियों में सफल होता है तथा कुछ परिस्थितियों में असफल। समायोजन एक ऐसी अनवरत् रूप से चलने वाली प्रक्रिया है जिसका स्वरूप एक छोर से दूसरे छोर तक बदलता रहता है और बालक के मन मस्तिष्क में प्रत्येक क्षण नवीन विचार उत्पन्न होते रहते है। रक्षात्मक युक्तियों से व्यक्ति को राहत मिलती है क्योंकि उसकी चिंताएं तथा तनाव दूर होते हैं तथा यह मानसिक प्रक्रियाएं सामाजिक और नैतिक मूल्यों के अनूकुल होते हैं। **फ्रायड के अनुसार** रक्षात्मक युक्तियाँ द्वंद अहम् और परांम के बीच विरोधों से आरंभ होता है मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत उसे नियंत्रित करता है क्योंकि द्वंद की अचेतन मांगे मूल प्रवृति बलोचित और अनैतिक होती है बहुधा वह अहम् और परमं द्वारा अवरूद्ध होते है। द्वंद और अहम तथा परांम के बीच सतत विरोधी क्रमशः तनाव, चिंता और दोष उत्पन्न करते हैं इसलिए व्यक्ति इस चिंता और दोष से अहम की

रक्षा करने के लिए तरीके ढूंढता है और रक्षात्मक उपाय करता है और युक्तियाँ जिससे अहम चिंता को कम करता है। किसी भी बालक को तभी सुसमायोजित माना जाता है जब उसका आचरण तथा व्यवहार सामाजिक मानदण्डों के अनुरूप होता है।

आवश्यकता एवं महत्व

विद्यार्थियों की आवश्यकता, रूचि, योग्यता को ध्यान में रखते हुए विद्यालय में शिक्षा प्रदान किया जाता है प्रत्येक विद्यार्थियों में वैयत्तिक विभिन्नता पायी जाती है सभी विद्यार्थियों की आवश्यकता, योग्यता, क्षमता, रुचि अन्य बालक से भिन्न होती है। बालक के मन में संवेगात्मक स्थिरता, मानसिक संघर्ष, तनाव, कुण्ठा, अन्तर्द्वन्द्व आदि के कारण बालक का मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है। ऐसी स्थिति में कष्टकारी अनुभवों से बचने के लिए बालक अपने चेतन तथा अचेतन दोनों ही रूपों में कुछ सुरक्षात्मक युक्तियों का प्रयोग करता है और विपरीत परिस्थितियों में भी अपना समायोजन करने का प्रयास करता है। विद्यालय में पढ़ाई के साथ साथ पाठ्य सहायक क्रियाओं का आयोजन किया जाता है और सभी बालक का प्रदर्शन इन दोनो क्रियाओं में एक समान नहीं होता है। जिसके कारण कई बार बच्चे दबाव और तनाव से ग्रसित हो जाते है और परिस्थिति के साथ समायोजन नही ंकर पाते हैं।

समस्या कथन

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के रक्षात्मक युक्तियों का तुलनात्मक अध्ययन।

शब्दों का परिभाषिकरण –

उच्च माध्यमिक विद्यालय – उच्च माध्यमिक स्तर से आशय कक्षा 9 और 10 कक्षा में शिक्षा ग्रहण करने से है।

रक्षात्मक युक्तियाँ – रक्षात्मक युक्तियाँ दुःखदायी संवेग, विचार और अंतर्नोद से व्यक्ति की रक्षा करती है। जब चिंता, दबाव एंव तनाव बहुत अधिक हो जाती है तब अहम (स्वयं) व्यक्ति की रक्षा करने के लिए रक्षात्मक युक्तियों का प्रयोग करते हैं। रक्षात्मक युक्तियाँ वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति के मनोभावों को विकृत या अपवार्जित करते है। यह रक्षात्मक युक्तियाँ विभिन्न तरीके से परिस्थितियों के साथ व्यक्ति को समायोजन करने में सहायता करती है ताकि व्यक्ति अपने मन को सुरक्षित रख सके।

शैक्षिक उपलब्धि – छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को मापने के लिए सत्र 2022–2023 के वार्षिक परीक्षा के सैद्धांतिक प्रप्तांको विश्लेषण किया गया है। उच्च माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 9 वीं और 10 वीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों के 8 वीं और 9 वीं के वार्षिक परीक्षा के सैद्धांतिक प्राप्तांकों लिया गया है।

शोध विधि – वर्तमान शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

उपकरण – वर्तमान शोध अध्ययन में डॉ. एन. आर. मृणाल ठाकुर एवं डॉ. उमा. सिंघाल द्वारा निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श – वर्तमान शोध में कक्षा 9 एवं 10 के विद्यालयों मे अध्ययन करने वाले लगभग 600 विद्यार्थियों को शामिल कर उनको लिंग, क्षेत्र एवं जाति में वर्गीकृत किया गया है।

चर –

स्वतन्त्र चर–विद्यार्थी, आश्रित चर–रक्षात्मक युक्तियाँ

शोध के उद्देश्य

1. आदिवासी छात्र एंव छात्राओं के रक्षात्मक युक्तियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. आदिवासी निजी एंव सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों में रक्षात्मक युक्तियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. आदिवासी ग्रामीण एंव शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के रक्षात्मक युक्तियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध के परिकल्पना

$H0_1$ - आदिवासी छात्र एंव छात्राओं के रक्षात्मक युक्तियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

$H0_2$ - आदिवासी निजी एंव सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों में रक्षात्मक युक्तियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

$H0_3$ - आदिवासी ग्रामीण एंव शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में रक्षात्मक युक्तियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध मे प्रयुक्त सांख्यिकी विधियाँ –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सहसंबंध गुणांक का उपयोग प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण करने हेतु किया गया है।

प्रदत्तो का विश्लेषण –

$H0_1$ - आदिवासी छात्र एंव छात्राओं के रक्षात्मक युक्तियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या–1

उच्च माध्यमिक स्तर के आदिवासी छात्र एवं छात्राओं के रक्षात्मक युक्तियों का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी. मूल्य का विश्लेषण एवं व्याख्या

चर	संख्या	औसत अंक	मानक विचलन	टी–मूल्य
छात्र	278	159.6	9.7	2.99
छात्रा	333	131.8	8.2	

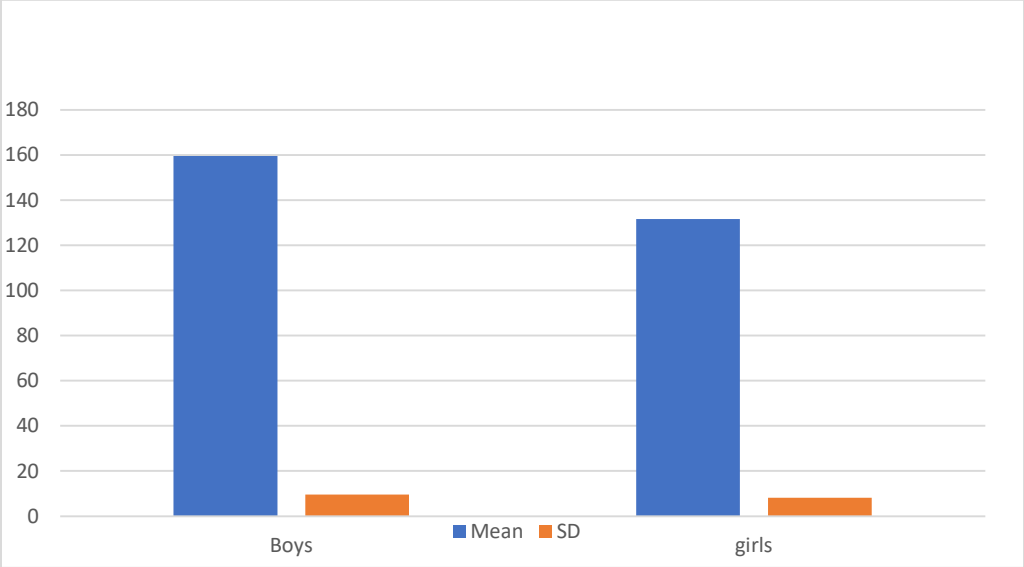

व्याख्या :– तालिका से स्पष्ट होता है कि अनुसूचित छात्रों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 159.6 एवं 9.7 प्राप्त हुआ है। जबकि कि अनुसूचित छात्राओं का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 131.8 एवं 8.2 प्राप्त हुआ है। इन दोनों का टी–मूल्य 2.99 प्राप्त हुआ है। प्राप्त परिणाम का टी–मूल्य 2.82 मान सार्थकता स्तर से अधिक है। अधिक मान सार्थक अन्तर को स्पष्ट करता है। अतः अनुसूचित छात्रों एवं छात्राओं के रक्षात्मक युक्तियों में सार्थक अन्तर पाया गया है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

$H0_2$ - आदिवासी निजी एंव सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों में रक्षात्मक युक्तियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या–2

उच्च माध्यमिक स्तर के आदिवासी निजी और सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों में रक्षात्मक युक्तियों का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी.–मूल्य का विश्लेषण एवं व्याख्या

चर	संख्या	औसत अंक	मानक विचलन	टी–मूल्य
सरकारी	267	169.4	7.5	0.41
निजी	333	170.8	8.0	

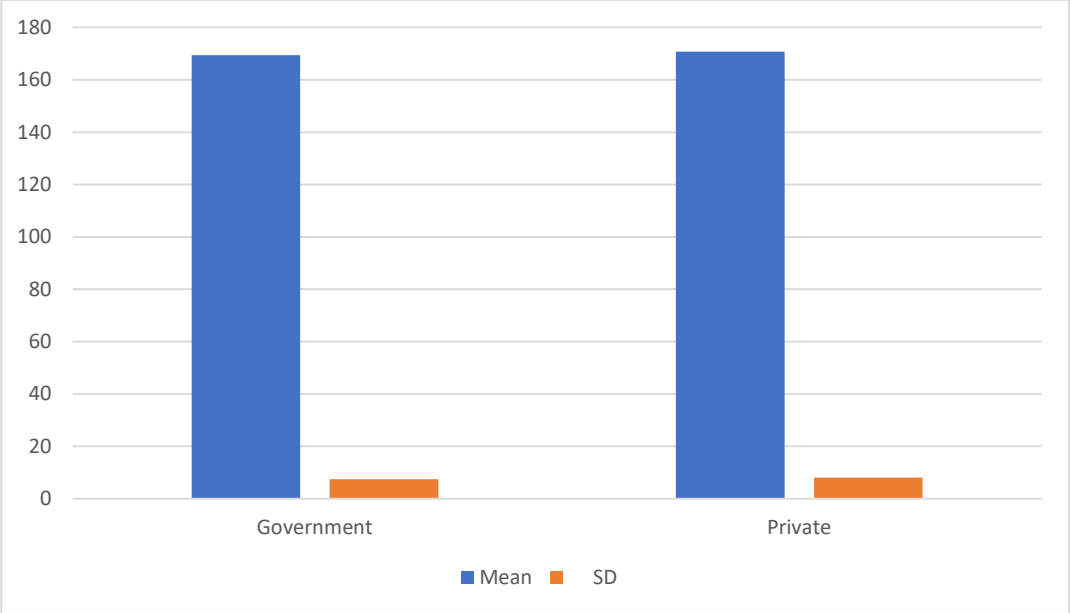

व्याख्या :– तालिका से स्पष्ट है कि अनुसूचित जनजाति के निजी विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमांक 169.4 एवं 7.5 प्राप्त हुआ है। जबकि कि अनुसूचित जनजाति के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 170..8 एवं 8.0 प्राप्त हुआ है। इन दोनों का टी–मूल्य 0.41 प्राप्त हुआ है। प्राप्त परिणाम का टी–मूल्य 0.41 मान सार्थकता स्तर से कम है। अतः अनुसूचित जनजाति के निजी और सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के रक्षात्मक युक्तियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

$H0_3$ - आदिवासी ग्रामीण एंव शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में रक्षात्मक युक्तियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका – 3

उच्च माध्यमिक स्तर के आदिवासी ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में रक्षात्मक युक्तियों का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी. मूल्य का विश्लेषण एवं व्याख्या

चर	संख्या	औसत अंक	मानक विचलन	टी–मूल्य
ग्रामीण	**390**	**172.4**	**8.5**	**0.31**
शहरी	**210**	**171.8**	**9.0**	

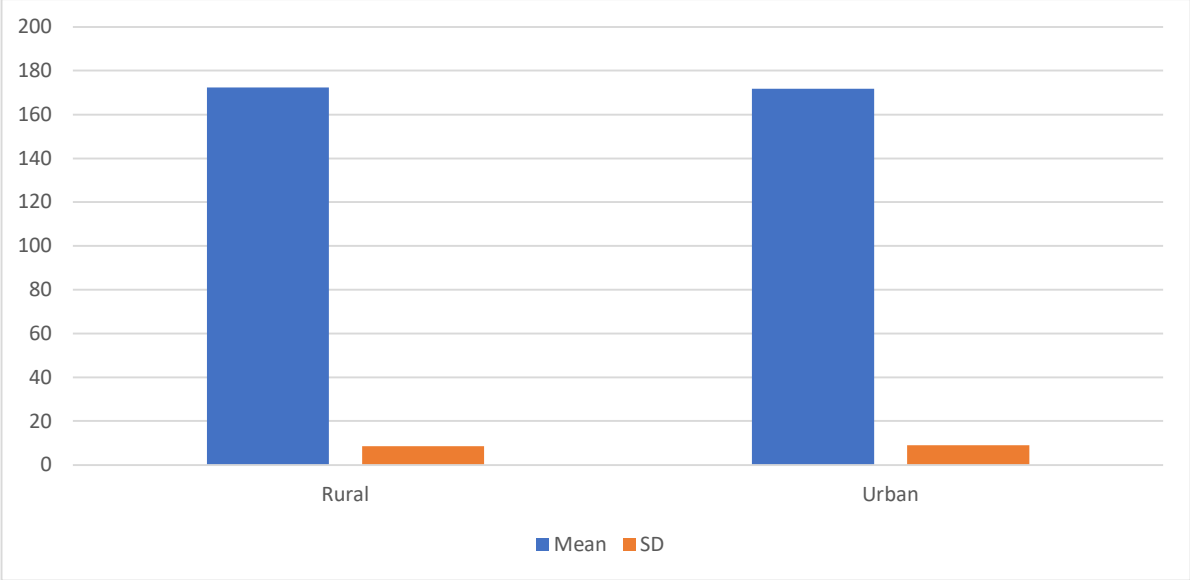

व्याख्या :– तालिका से स्पष्ट है कि आदिवासी ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 172.4 एवं 8.5 प्राप्त हुआ है। जबकि कि आदिवासी शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 171.

8 एवं 9.0 प्राप्त हुआ है। इन दोनों का टी–मूल्य 0.31 प्राप्त हुआ है। प्राप्त परिणाम का टी–मूल्य 0.31 मान सार्थकता स्तर से कम है। अतः आदिवासी निजी और सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के रक्षात्मक युक्तियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

शोध के निष्कर्ष –

1. उच्च माध्यमिक स्तर के आदिवासी छात्र एवं छात्राओं के रक्षात्मक युक्तियों में सार्थक अन्तर पाया गया, अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के आदिवासी निजी और सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों के रक्षात्मक युक्तियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया, अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के आदिवासी ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के रक्षात्मक युक्तियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया. अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

सुझाव

किशोर, देश की अमुल्य धरोहर एवं भविष्य के निर्माता है किशोरों का विकास, देश को उत्तम नेतृत्व प्रदान करता है और समाज को अच्छे नागरिक एवं योग्य नागरिक प्रदान करता हैं। अतः शिक्षक व अभिभावक उनकी मानसिक एवं सांवेगिक स्थिति को समझने व उन्हें परिवर्तन के साथ समायोजन करने में सहयोग प्रदान कर सकते हैं।

- विद्यार्थियों को शैक्षिक गतिविधियो ं में ज्यादा से ज्यादा संलग्न करना चाहिए जिससे उन्हे ं अधिगमगत तनाव से दूर रखा जा सके।
- विद्यार्थियों मे ंशैक्षिक तनाव को कम करने के लिए स्वस्थ प्रतिस्पर्धा होनी चाहिए जिससे उन पर ग्रेड या अच्छे प्रतिशत लाने का अतिरिक्त दबाव न पड़े।
- समायोजन प्रकृति का नियम है विद्यार्थियों को समायोजित होने के फायदे बताने चाहिए जिससे विद्यार्थी कक्षागत तनाव को भूलकर वातावरण के साथ उच्च समायोजन स्थापित कर सके।
- विद्यार्थियों में शैक्षिक तनाव को दूर कर उच्च अधिगम लक्ष्यों को प्राप्त कराना है । प्रत्येक विद्यालयों में शिक्षण व्यवस्था लागू की जानी चाहिए।
- अभिभावकों को छात्र एवं छात्राओं में भेदभाव ना करते हुए दोनों में ही वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए जिससे वह जीवन की समस्याओं का सामना करने हेतु तैयार हो सके।
- विद्यालय में विशेष विद्यार्थियों के लिए विशेष सुविधाओं का प्रबंध होना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. **सिहं आर. एन. एवं अन्य (2020),** आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन।
2. **चौहान आर. एवं अन्य (2019)** बाल्यावस्था एवं उसका विकास।
3. **सिंह ए. के. (1997),** उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास।
4. **चौहान री एवं पाठक पी. डी. (2018–2019),** बाल्यावस्था एवं उसका विकास.।
5. **सिंह, कुमार अरुण, (2015),** मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा मे ं शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसी दास।
6. **पाल, के० एस गुप्त, नरायण लक्ष्मी, मोहन मदन, (2006–2007),** शिक्षा मनोविज्ञान इलाहाबादः न्यू कैलाश प्रकाशन।
7. **पाण्डेय, प्रसाद कामता, (2006),** शैक्षिक अनुसन्धान वाराणसीः विश्विद्यालय प्रकाशन 2006
8. **गुप्ता S.P. (2006–2007),** आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन इलाहाबादःशारदा पुस्तक भवन।